



उपनिषदों में वर्णित विद्या-अविद्या की प्रासंगिकता

डॉ० राजपाल सिंह शास्त्री **

डॉ० एन० के० आर्य **

उपनिषद् उच्चतम बुद्धि की उपज है, यह ब्रह्मवेत्ता के दृष्टिकोण से चराचर जगत सच्चिदानन्दमय है। उपनिषद् को ज्ञान-विज्ञान की परम्परा में स्थावर चराचर ज्ञान का प्रतीक माना गया है। इस संसार में ऐसा कोई स्वाध्याय नहीं है, जो उपनिषदों के समान उपयोगी एवं उन्नति की ओर ले जाने वाला हो। उपनिषद् वेद के अन्तर्गत आने वाला प्राचीन दार्शनिक ग्रन्थ है। उपनिषद् का मुख्य उद्देश्य प्रत्येक मनुष्य को असत्य से सत्य के मार्ग पर ले जाना है।

उपनिषद् शब्द उप एवं नि उपसर्ग पूर्वक सद् धातु में कृप् प्रत्यय लगाकर निष्पन्न हुआ है। उप का अर्थ है- समीप, नि का अर्थ है- निश्चय या निष्ठापूर्वक, सद् का अर्थ है बैठना। उपनिषद् का शाब्दिक अर्थ है- तत्त्वज्ञान के निमित्त गुरु के समीप निश्चयपूर्वक या निष्ठापूर्वक बैठकर ज्ञान प्राप्त करना। तत्त्वज्ञान का संग्रह उपनिषदों में विशेष रूप से प्राप्त होता है। उपनिषदों के भाष्य प्रणयन के समय आदिकवि शंकराचार्य ने अविद्या- नाश, दुःख निरोध, ब्रह्म निरोध एवं ब्रह्म प्राप्ति को ब्रह्म विद्या का प्रतीक माना है। वेद का अंतिम भाग होने के कारण उपनिषद् को वेदान्त भी कहा गया है।
विद्या अविद्या के सम्बन्ध में कहा गया है-

**अन्धन्तमः प्रविशन्ति येऽविद्यामुपासते।
ततो भूय इव ते तमो य उ विद्यायां रताः ॥ ३**

ईशावास्योपनिषद् में कहा गया है कि जो मनुष्य अविद्या को अपनाते हैं, वह अज्ञानयुक्त अज्ञान में पड़े रहते हैं, जो विद्या में मदमस्त है वे प्रायः अंधकार से बहुत दूर हैं अर्थात् जो मनुष्य ज्ञानरूपी साधन अविद्या का विविध प्रकार से कर्मों को अनुष्ठान करते हैं, वे उन कर्मों के फलस्वरूप अज्ञान रूपी अन्धकार से परिपूर्ण विविध योनियों एवं भोगों को प्राप्त होते हैं। जो मनुष्य विद्या रूपी ज्ञान के परम लक्ष्य को प्राप्त करना चाहते हैं वे परम पिता परमेश्वर का निरंतर अभ्यास करते हुए सत्य के मार्ग को अपनाते हैं और अपने लक्ष्य को प्राप्त कर जाते हैं। इसलिए प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है कि वह अपने अविद्या रूपी ज्ञान का त्याग कर विद्या रूपी ज्ञान को अपना कर अपने कर्तव्य का पालन करें। परम ब्रह्म परमात्मा का दर्शन करने के लिए सत्य रूपी ज्ञान का होना अति आवश्यक है।

ईशावास्योपनिषद् में विद्या को आत्म ज्ञान कहा गया है, जबकि अविद्या को भौतिक कर्म का आधार बताया गया है। विद्या-अविद्या दोनों ही एक दुसरे के पूरक हैं। अविद्या से मृत्यु पर विजय प्राप्त की जाती है, जबकि विद्या से अमर तत्व या आध्यात्मिक की प्राप्ति होती है। विद्या-अविद्या के सम्बन्ध में कठोपनिषद् में कहा गया है-

**श्रेयश्च प्रेमश्च मनुष्येतस्तो, सम्परीत्य विविनक्ति धीरः ।
श्रेयो हि धीरो अभिपेयसो वृणीते, प्रेयो मन्दो योगक्षेमाद् वृणीते ॥ ३**

कठोपनिषद् में विद्या को श्रेयस मार्ग कहा गया है, जबकि अविद्या को प्रेयस मार्ग कहा गया है। श्रेयस एवं प्रेयस मार्ग दोनों मार्ग ही मनुष्य को प्राप्त होते हैं, इन दोनों को अच्छी प्रकार से जानकर बुद्धिमान पुरुष विवेचना करता है, जो बुद्धिमान व्यक्ति निश्चय ही प्रेयस मार्ग की अपेक्षा श्रेयस मार्ग को चुनने का प्रयास करता है। योग क्षेत्र से रहित मूर्ख मनुष्य प्रेयस मार्ग का चुनता है। इसलिए विद्या को श्रेयस मार्ग एवं अविद्या के प्रेयस मार्ग कहा गया है। विद्या अविद्या के मार्ग को समझाते हुए यमराज नचिकेता से कहते हैं-

दूरमेते विपरीते विषूची, अविद्या या च विद्येति ज्ञाता ।^{iv}

यमराज नचिकेता से कहते हैं कि हे राजन! जो अविद्या एवं विद्या इस प्रकार से मानी गयी है, जो विपरीत स्वभाव वाली व भिन्न-भिन्न फल वाली हैं मैं (यमराज) तुम्हें विद्या का चाहने वाला मानता हूँ, क्योंकि तुम्हें बहुत सी इच्छाएँ भी आकर्षित नहीं कर सकती हैं। मैं तुम्हें विद्या के महत्व को बताने का प्रयास कर रहा हूँ। विद्या के महत्व को दर्शाते हुए कहा गया है-

एतद्ध्येवाक्षरं ब्रह्म एतद्ध्येवाक्षरं परम् ।

** सहायक आचार्य, संस्कृत-विभाग, स्वामी रामतीर्थ परिसर, टिहरी गढ़वाल, (हे० न० ब० ग० केन्द्रीय विश्वविद्यालय) उत्तराखण्ड-249199, rajpalshastri1234@gmail.com

** विभागाध्यक्ष, सह आचार्य, संस्कृत-विभाग, स्वामी रामतीर्थ परिसर, टिहरी गढ़वाल, (हे० न० ब० ग० केन्द्रीय विश्वविद्यालय) उत्तराखण्ड-249199, dmka.arya9@gmail.com

एतद्धेवाक्षरं ज्ञात्वा यो यदिच्छति तस्य तत् ॥^v

कठोपनिषद् में विद्या को ब्रह्म भी कहा गया है। अर्थात् यह निश्चित रूप से अक्षर ब्रह्म है, यह अक्षर निश्चित रूप से सर्वोपरि एवं अविनश्वर अक्षर ही ब्रह्म स्वरूप वाला ही विद्या है। जो व्यक्ति इस विद्या रूपी अक्षर ब्रह्म को जान लेता है, वही ब्रह्म का रुवरूप वाला कहलाता है, वही विद्या का ज्ञाता कहलाता है। सर्वश्रेष्ठ विद्या को जानने वाला व्यक्ति ही ब्रह्मलोक को समझ लेता है। विद्या-अविद्या के सम्बन्ध में ईशावास्योपनिषद् में कहा गया है-

विद्यां चाविद्यां च यस्तदवेदोभ्य सह ।

अविद्याया मृत्युं तीर्त्वा विद्यायाऽमृतमश्नुते ॥^{vi}

जो मनुष्य विद्या रूपी ज्ञान तत्व को जान लेता है और अविद्या रूपी कर्म तत्व को साथ-साथ जानने का प्रयास करता है, वह कर्मों के अनुष्ठान से मृत्यु को पार करके ज्ञान रूपी अनुष्ठान से अमृतत्व का उपयोग कर लेता है, अर्थात् विद्या रूपी तत्वों के साथ-साथ अविद्या रूपी ज्ञान तत्व के समझने भी प्रयास कर लेता है, वही व्यक्ति ज्ञान व अज्ञान के तत्वों को समझ जाता है यही विद्या रूपी तत्व है। यही ज्ञान रूपी महिमा है। इस सम्बन्ध में कहा गया है-

अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणों, न हन्यते हन्यमाने शरीरे ।^{vii}

ज्ञानरूपी तत्व को विद्या कहा गया है, जबकि अज्ञानरूपी तत्व को अविद्या कहा गया है। ज्ञानरूपी आत्मा न किसी को उत्पन्न करता है न किसी को मारता है, यह अजन्मा नित्य निरंतर रहने वाला एवं सनातन है। मारे जाते हुए शरीर के होने पर यह नहीं मरता है, इसलिए गीता में कहा गया है-

नायं हन्ति न हन्यते ।^{viii}

यह आत्मा अजर एवं अमर है इस आत्मा को न कोई मार सकता है, न काट सकता है, न जला सकता है। विद्या या श्रेय मार्ग को आत्मकल्याण पथ का साथी बताया गया है। इस सम्बन्ध में कहा गया है-

आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु ।

बुद्धि तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहमेव च ॥^{ix}

कठोपनिषद् में कहा गया है श्रेय (विद्या) मार्ग आध्यात्मिक साधना का (पथ) मार्ग है, यह मन को स्थिर एवं शुद्ध बनाता है। यम नचिकेता से कहते हैं, हे नाचिकेता! जो व्यक्ति विद्या को जनता है, वह अपनी आत्मा को रथी, शरीर रूपी रथ को सावार या स्वामी जानों, शरीर को रथ, बुद्धि को सारथी जानों एवं मन को लगाम जानों यही विद्या का मार्ग है, यही विद्या है। अविद्या या प्रेयस मार्ग का परिणाम कभी भी स्थायी नहीं होता है, अविद्या रूपी तत्व मन को हमेशा भटकाता रहता है। इस सम्बन्ध में कहा गया है-

प्रियो मन्दो योगक्षेमाद् वृणीते ।^x

कठोपनिषद् में कहा गया है, कि मन्द बुद्धि वाला मनुष्य अविद्या प्रेयस मार्ग को चुनता है, क्योंकि वह भोग एवं क्षेम को चाहता है, अविद्या वाला व्यक्ति हमेशा प्राप्त वस्तुओं की रक्षा एवं नई वस्तुओं की प्राप्ति में लगा रहता है। प्रेयस मार्ग वह मार्ग है, जो मनुष्य की इन्द्रियों के भोग इच्छाओं एवं सांसारिक विषयों को अपने वश में करने का प्रयास करता है, जिसे अविद्या के नाम से जाना जाता है। प्रेयस मार्ग मन का भय एवं दुःख का कारण होता है। प्रेयस एवं श्रेयस का शास्त्रीय आधार कठोपनिषद् में यम एवं नचिकेता के सम्वाद में प्राप्त होता है-

न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यो, लास्यामहे वित्तमद्राक्ष्म चेत्वा ।^{xi}

यमराज नचिकेता को अविद्या रूपी धन, लोभ, लालच, दीर्घायु राग एवं सोना, चांदी इत्यादि सभी वस्तुओं का लालच देने का प्रयास करते हैं, तो नचिकेता कहते हैं, हे राजन! मुझ जैसा मनुष्य धन द्वारा तृप्त किये जाने योग्य नहीं है, आप जैसे महान महात्मा के दर्शन हो गए हैं तो अब मैं आपके दर्शन मात्र से ही धन्य हो गया हूँ। जब तक आप मेरे स्वामी हो तो हम जी लेंगे। मेरा माँगने योग्य वर तो वही है अर्थात् मुझे किसी धन, दौलत की इच्छा नहीं है। मैं तो आपके दर्शन पाकर ही धन्य हो गया हूँ। इस प्रकार यहाँ पर अविद्या का त्याग और विद्या को स्वीकार किया गया है। अविद्या एवं विद्या के सम्बन्ध में मुण्डकोपनिषद् में कहा गया है-

असूर्या नाम ते लोका ।^{xii}

जो मनुष्य असत्य के मार्ग पर चलत है, वह अन्धकार की दिशा में जाता है अर्थात् जो व्यक्ति असत्य को मानता है, वही अविद्या है और जो सत्य को मानता है, वही विद्या है। विद्या ही प्रकाशमान है। इस सम्बन्ध में नीतिशतकम् में भी कहा गया है

विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनम्,

विद्या भोगकरी यशःसुखकरी विद्या गुरुणां गुरुः।

विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परम् देवता,

विद्या राजसु पूजिता न तु धनं, विद्याविहीनः पशुः ।^{xiii}

भर्तृहरि विद्या के महत्व को दर्शाते हुए कहते हैं कि विद्या व्यक्ति का सर्वश्रेष्ठ धन है। विद्या भोगों से देने वाली यश एवं सुख को उत्पन्न करने वाली है, विद्या गुरु की भी गुरु है, विदेश जाने पर विद्या आत्मीय जन के समान है, विद्या परम देवता है, विद्या राजाओं में पूजनीय है, न कि धन, विद्या से रहित मनुष्य पशु के समान है। इसलिए विद्या सर्वश्रेष्ठ है।

उपसंहार-

उपनिषदों के अध्ययन से पता चलता है कि मानव जीवन में विद्या एवं अविद्या का विशेष महत्व है। उपनिषद् में विद्या को श्रेयस मार्ग एवं अविद्या को प्रेयस मार्ग के नाम से भी जाना जाता है। उपनिषद् एवं अन्य ग्रंथों के गहन अध्ययन से पता चलता है कि अविद्या की अपेक्षा विद्या को सर्वश्रेष्ठ स्थान दिया गया है। विद्या को सत्य कहा गया है, जबकि अविद्या का असत्य कहा गया है। मानव जीवन में विद्या का होना अति आवश्यक है। विद्या के बिना तो मनुष्य पशुओं के समान है। जो मनुष्य विद्या को जानते हैं वही ब्रह्म मार्ग या ब्रह्मलोक को जानने का माध्यम जानते हैं अर्थात् विद्या ही ब्रह्मलोक का मार्ग है। इस प्रकार निष्कर्ष रूप से कह सकते हैं एक विद्या एवं अविद्या का मानव जीवन में विशेष महत्व बताया गया है।

सन्दर्भ सूची :-

1. ⁱ ईशावास्योपनिषद् भू० पृष्ठ सं० 11
2. ⁱⁱ ईशावास्योपनिषद् - 9
3. ⁱⁱⁱ कठोपनिषद् - 1/2/2
4. ^{iv} कठोपनिषद् - 1/2/3
5. ^v कठोपनिषद् - 1/2/16
6. ^{vi} ईशावास्योपनिषद् - 11
7. ^{vii} कठोपनिषद् - 1/2/18
8. ^{viii} गीता - 2/19
9. ^{ix} कठोपनिषद् - 1/3/3
10. ^x कठोपनिषद् - 2/2
11. ^{xi} कठोपनिषद् 1/27
12. ^{xii} मुण्डकोपनिषद् 1/2/1
13. ^{xiii} नीतिशतकम् 20